दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

□ वर्ष 64 □ अंक-15 □ दिल्ली □ मई (प्रथम) □ मूल्य : 2 रु.

भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' के असली हकदार–बाबू जगजीवनराम

• डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

युग पुरुषं बाबू जगजीवन राम जी को आदर और प्यार से लोग उन्हें 'बाबूजी' कहकर पुकारते हैं जैसे बाबा साहब डा. अम्बेडकर को सम्मानीय शब्द 'बाबा साहब' के नाम से। बाबा साहब जीवित रहते हमें उनके साक्षात् दर्शन करने का सौभाग्य तो मुझे प्राप्त नहीं हुआ, पर उनके लेखन और साहित्य और क्रान्तिकारी कार्यों द्वारा ही उनके महान व्यक्तित्व व कृतित्व के विषय में जाना, पहचाना और उससे प्रभावित हुआ। वहीं, बाबूजी के न केवल साक्षात् दर्शन किये, बल्कि मैंने उनके सानिन्ध्य में रहकर उनके व्यक्तित्व व कृतित्व के विषय में गहराई से काफी कुछ जाना, पहचाना और उनकी छत्रछाया में–सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक और साहित्यिक क्षेत्रों में कार्य करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ।

देश की राजनीति के शिखर पर पहुंचने के बावजूद वह अपने समाज से निरन्तर जुड़े थे और उनके दुःख–सुख में निरन्तर शामिल होते थे। 1958 में पहली बार मैंने उनके दर्शन किये थे जब वे रेल मंत्री थे और हम उन्हें गुरु रविदास जी की शोभा यात्रा, जो दिल्ली के लालकिले से देवनगर विश्राम धाम तक निकलती है, उसमें पधारने का निमंत्रण देने गये थे। बाबूजी ने रेल मंत्री के रूप में काफी व्यस्त कार्यक्रम होने के बावजूद यह कहते हुए कि यह तो हमारे सामाजिक समता के सूत्रधार, हमारे प्रेरणादायक संत शिरोमणि गुरु रविदास जी का जन्म दिवस का कार्यक्रम है, मैं जरूर आऊंगा। और वे शोभा यात्रा में शरीक होने जरूर पधारे और सभी कार्यकर्त्ताओं की हौंसला अफजाई की। बाबूजी की माता जी का जब देहान्त हुआ तो दिल्ली की जाटव पंचायत की ओर उन्हें पगड़ी पहनाकर पारिवारिक बन्धु की तरह उनका सम्मान किया था, प्रत्येक होली के त्यौहार पर वे अपने समाज के लोगों के साथ तिलक लगाकर उन्हें गुजिया खिलाकर वे होली खेलते थे। उसके साथ ही गाना–बजाना, साथ–साथ चलता रहता था। इस तरह वे सदैव अपने समाज से जुड़े रहे, और उनके उत्थान, कल्याण, विकास के लिए हमेशा सोचकर कार्य करते रहे।

बाबूजी से इसके बाद मेरा तब मिलना हुआ जब 'कामराज प्लान' के अन्तर्गत 1963 में प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने उनसे मन्त्री पद से इस्तीफा ले लिया। तब वे अपनी कोठी में अकेले पड़े रहते थे क्योंकि पं. नेहरू ने अपने मंत्रिमंडल से बाहर निकाले अन्य मंत्रियों को तो वापिस ले लिया, पर बाबूजी को दुबारा मंत्री नहीं बनाया। पं. नेहरू ने यह बाबूजी के साथ जानबूझकर विश्वासघात किया था क्योंकि उन्हें डर था कि उनके देहान्त के बाद कांग्रेस में वरिष्ठ और सबसे ज्यादा अनुभवी होने के कारण उन्हें ही देश का प्रधानमंत्री बनाया जायेगा, फिर उनकी बेटी इन्दू (इन्दिरा गांधी) का क्या होगा, वह कभी भी प्रधानमंत्री नहीं बन पायेंगी। इसीलिए 'बाबूजी' को अपने मंत्रिमंडल से निकालने के लिए 'कामराज प्लान' की उन्होंने योजना बनाई और अपमानित करके बाबूजी को घर बैठा दिया। पर बाबूजी के साथ उनका समर्थक उनका भरा पूरा समाज था जो उनकी कोठी पर पहले से ज्यादा जुटता था। इससे बाबूजी को आत्मबल मिलता था। मैंने भी अपनी संवेदनायें बाबूजी के सामने रखीं। इस पर बाबूजी ने कहा कि हम सच्चे राष्ट्रप्रेमी हैं। इसलिए मैंने राष्ट्र को सदैव प्राथमिकता और सर्वोच्चता दी है। इसलिए यह सब जानते हुए कि मेरे साथ विश्वासघात हो रहा है, राष्ट्र हित में अपना इस्तीफा उन्हें सौंप दिया। बाबूजी के साथ हुए इस विश्वासघात की घटना को मैंने अपने समाचार पत्र 'हिमायती' में विस्तार से छापा और उसका शीर्षक दिया था – 'एकलव्य एक बार फिर छला गया।' बाबूजी ने 'हिमायती' के इस अंक को पढ़कर मुझे बधाई दी थी।

बाबूजी के विषय में यह कहावत समाज और देश में प्रचलित है कि बाबूजी को कोई भी घटिया से घटिया मंत्रालय दिया जाये, वह उस मंत्रालय को अपनी बुद्धि, अनुभव, कर्तव्यनिष्ठा और सतत परिश्रम से मालामाल कर देंगे। प्रकृति हमेशा उनके साथ रहकर

(शेष भाग... पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

गतांक से आगे....

अगर अपनों ने धोखा नहीं दिया होता और गांधी जी ने ना छला होता तो बाबा साहब डा. अम्बेडकर सौ वर्ष तक जीवित रहते

*** डा. सोहनपाल सुमनाक्षर**

गांधी जी की ओर से, जो उस समय पूना की यरवदा जेल में बन्द थे, हिन्दू नेताओं ने समझौता प्रस्ताव रखा कि अगर डा. अम्बेडकर ब्रिटिश सरकार द्वारा दिये गये अछूत दलितों के कल्याण के लिए दिये 'कम्युनल अवार्ड' को लौटा देते हैं तो इस एवज में उन्हें दलितों को निर्वाचन में एक वोट का अधिकार देने, उनकी जनसंख्या के अनुपात में निर्वाचन में आरक्षण देने, उनके लिए निर्वाचन में आरक्षित वार्ड बनाने, अछूतों की आबादी के अनुपात में सभी सरकारी नौकरियों, शिक्षण संस्थानों में पदों को आरक्षित करके उन्हें भरा जा सकेगा। अछूतों (हरिजनों) को समाज के सवर्ण लोगों के समकक्ष अगले 10 सालों में लाया जायेगा और उनके साथ छुआछूत, भेदभाव, ऊंचनीच सद्भाव के साथ खत्म किया जायेगा और इसके लिए जरूरी कठोर दण्डात्मक कानून बनाया जायेगा।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने गांधी जी के प्राणों की रक्षा करने के लिए हिन्दू नेताओं के प्रस्तावों को मान लिया। गांधी जी और उनके हिन्दू नेताओं और बाबा साहब डा. अम्बेडकर के बीच हुए इस समझौते को 'पूना पैक्ट' का नाम दिया गया। 'पूना पैक्ट' पर डा. अम्बेडकर और गांधी जी की ओर से हिन्दू नेताओं के हस्ताक्षर होने पर गांधी जी ने अपना आमरण अनशन खत्म कर दिया। उधर बाबा साहब ने ब्रिटिश सरकार को कम्युनल अवार्ड को लौटा दिया। इससे गांधी जी की जान बच गई। देश में खुशी की लहर चल निकली। पर बाबा साहब के लिए 'पूना पैक्ट' समझौता 'विषपान' से कम नहीं था। उन्होंने गांधी जी के प्राणों के साथ समाज व देश में होने वाले सम्भावित खून–खराबे से भी अपने अछूत दलित भाइयों को बचा लिया। पूना पैक्ट समझौते को मानने और 'कम्युनल अवार्ड' को लौटाने से दलितों (अछूतों) को मिले निर्वाचन में दो वोट देने के अधिकार से तो हाथ धोना ही पड़ा, साथ ही दलित अछूतों के लिए अलग से निर्वाचन वार्ड बनाने के अधिकार को भी खोना पड़ा। इससे बाबा साहब डा. अम्बेडकर के मन व मस्तिष्क पर बहुत बड़ा आघात लगा और वे गांधी व उनके हिन्दू चेलों द्वारा छले जाने पर बेचैन से रहने लगे।

पूना समझौते के बाद गांधी जी ने समाज में सम्मान व..... हरिजनों के बीच छुआछूत, ऊंचनीच, भेदभाव मिटाने और एक दूसरे को बराबरी पर लाने के लिए 'हरिजन सेवक संघ' संस्था स्थापित की, हिन्दी व अंग्रेजी में 'हरिजन' समाचार पत्र निकालना शुरू किया, दलित हरिजन व उच्च जाति के सवर्णों के बीच अस्पृश्यता निवारण कार्यक्रम के अन्तर्गत सहभोज शुरू किये, स्वयं उन्होंने हरिजन दलित बस्तियों में रहना शुरू किया। स्वयं मैला उठाने का अभियान चलाया, हरिजन व हिन्दू सवर्ण बच्चों के लिए पाठशालायें खोली, पर बाबा साहब डा. अम्बेडकर की नजरों में यह सब गांधी जी का दिखावा था, नाटक था। गांधी जी के इन

(शेष भाग... पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

सम्पादकीय का शेष....अगर अपनों ने धोखा नहीं दिया होता और गांधी जी ने ना छला होता तो बाबा साहब डा. अम्बेडकर सौ वर्ष तक जीवित रहते

दिखावटी नौटंकी कार्यों से किसी भी सवर्ण हिन्दू का न तो दिल पसीजा और न ही उनका हृदय परिवर्तन हुआ। इसके विपरीत जात–पांत, छुआछूत, भेदभाव और बढ़ गया। इस सबके बावजूद दलित हरिजनों के साथ हिन्दुओं का बर्ताव पूर्ववत रहा। दलित हरिजन अब भी न मंदिर में दाखिल हो सकते थे, न नदी–घाटों, तालाब व कुओं पर चढ़ सकते थे। गांवों में घोड़ी पर चढ़कर गाजे–बाजे के साथ बारात निकालना आज भी निषेध था। स्कूल मंदिर के दरवाजे उनके लिए आज भी बंद थे। गांवों में उनसे आज भी बेगारी लेने का दस्तूर पूर्ववत था। किसी तरह का ना–नुकर करने पर उनकी पिटाई, धुनाई, पाबन्दी आज भी चालू थी। दलित अछूत महिलाओं की अबरू तो रोज लूटती थी, उन्हें बचाने वाला कोई नहीं था।

अब चूंकि गांधी जी के छलावे में आकर बाबा साहब डा. अम्बेडकर के साथ सम्पूर्ण दलित अछूत समाज ब्रिटिश सरकार के 'कम्युनल अवार्ड' को लौटा चुका था, ऐसी हालत में सरकार की ओर से भी उनके उत्पीड़न से छुटकारा दिलाने वाला कोई नहीं था। एक ओर उन्हें 'हिन्दू' समझकर सरकार व मुस्लिम समुदाय जुल्म बढ़ाता था, वहीं वर्ण व्यवस्था के नाम पर सनातनी सवर्ण हिन्दू 'हिन्दू' धर्म के नाम पर खुला अत्याचार करता था। अगर कोई गांधी जी से 'पूना पैक्ट' में हुए समझौते के विषय में पूछता तो वह बड़ी चतुराई से कहते कि यह बात उन नेताओं से पूछिये जिन्होंने इस समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं, मैं तो वहां नहीं था, फिर भी सनातनी हिन्दुओं का हृदय परिवर्तन करने में मैं लगा हूं। आप जानते ही हैं कि हजारों सालों की बीमारी एक दिन में खत्म नहीं हो जाती।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर गांधी जी के इस उत्तर से दुखी थे, पर इसकी शिकायत वह न तो ब्रिटिश सरकार से कर सकते थे और न ही कट्टरपंथी मनुवादी हिन्दुओं से कह सकते थे। इसलिए वह गांधी जी के षड्यंत्र व छलावे से बहुत चोट खाये बैठे थे। इसलिए अब उन्होंने मन बना लिया कि अब उन्हें ऐसे धर्म में नहीं रहना जहां मनुष्य की कीमत जानवरों के बराबर भी नहीं और जहां उन्हें मनुष्य के अधिकारों से वंचित करके इंसान ही नहीं माना जाता है। इसलिये इस सदमे में उभरने और सनातनी हिन्दू नेता गांधी जी को उनके सवर्णों का जवाब देने के लिए हिन्दू धर्म छोड़ने का निश्चय कर लिया कि अब ऐसे गले–सड़े धर्म में नहीं रहना है जहां अधिकार के नाम पर कुछ भी न हो, और कर्त्तव्यों का बोझ से सारा जीवन दबा हुआ हो।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने 'पूना पैक्ट' छलावे के तीन साल बाद येवला (नाशिक) महाराष्ट्र के विशाल अछूत सम्मेलन में 1935 में हिन्दू धर्म छोड़ने की घोषणा करते हुए कहा कि ''मैं हिन्दू पैदा हुआ था, पर मेरे बस की बात नहीं थी, पर मैं हिन्दू रहते मरूंगा नहीं, यह मेरे हाथ की बात है।''

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने अपनी इस प्रतिज्ञा को 14 अक्तूबर, 1956 को 'विजय दशमी' के दिन नागपुर की दीक्षा भूमि में अपने 10 लाख अनुयायिओं के साथ हिन्दू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म की दीक्षा ली।

यह गांधी जी को उनके द्वारा हिन्दू धर्म बचाने के लिए 'पूना पैक्ट' समझौते के रूप में किए षड्यंत्र व छलावे का बाबा साहब डा. अम्बेडकर का जवाब था। काश, गांधी जी अपने किये हुए षड्यंत्र व छलावे के इस जवाब को देखने व सुनने के लिये जीवित होते। •

आंसू ही आंसू

– डा. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

आंसू ही आंसू है
मेरे भारत।
नम हुई है आंसू से
हर आदमी की आंख
और स्वतंत्रता, स्वराज
व समता का
सपना संजोती भारतमाता
संशय की पीड़ा भोग रही है
चौपाओं–दुरायों तक की जिंदगी
कुछ की फितरती करतूतों ने
बिना युद्ध के महाभारत का
विराट दृश्य उपस्थित किया है
आठों प्रहर तप्त–सिन्धु में
और उसके आसपास
कभी–कभी सुनाई देता है
आक्रोश का तीखा स्वर
तो घात–प्रतिघात की तड़ित
गिर पड़ती है
किसी विराट शहर पर
और लग जाता है मलबे का ढेर
राजधानी की बस्ती–बाजारों में
मोहक बाग–बगीचों,
फुटपाथों के सौन्दर्य–
प्रसाधनों में
आंसू ही आंसू है
मेरे भारत।
आंसू ही आंसू से
चाचा नेहरू के प्यारे बच्चों की
आंखों में
खेलने और पढ़ने के वक्त
उतर आता है मर्दीला आकाश
और झपट्टे मारता बाज
जो किसी कबूतर की ताक में
आंख लगाए घूमता है
लेकिन अफसोस
21वीं सदी में पहुंचने को आतुर
मेरा भारत लहुलुहान होकर
किसी के द्वारा
हाथ से उछालने पर
मौज–मस्ती के गीत गाता है
स्वागत–द्वार बन जाता है
परन्तु विरासत और
वसीयत में पाता है
आने वाली पीढ़ी के नाम
आंसुओं का अम्बार
निर्धनता का निर्झर
संकोच का समुद्र
और पछाड़ खाती नदियां
सच में–
आंसू ही आंसू से मेरे भारत! •

पृष्ठ 1 का शेष...भारत के सर्वोच्च सम्मान भारतरत्न के असली हकदार–बाबू जगजीवनराम

उनको सफलता दिलाती है। असली बात यह है कि बाबूजी को जो भी सेवा कार्य मिला, उसे उन्होंने अपने दिल से अपना धर्म कार्य मानकर उसमें तन–मन लगाकर पूरा किया और इसे शिखर पर ले जाकर अपना राष्ट्रधर्म निभाया। बाबूजी 1946-52 तक भारत सरकार में श्रम मंत्री रहे। इस अवधि में उन्होंने मजदूरों के कल्याण के लिए अनेक कानून बनाये। उनके वेतन और अवकाश की उचित व्यवस्था की। इससे कामगारों के बीच उनकी लोकप्रियता बढ़ी। बाबूजी 1952-56 तक संचार मंत्री रहे। उन्होंने इस अवधि में देश के गांवों को डाकघरों से जोड़ा और टेलीफोन एक्सचेंज व तारघरों की स्थापना की और घर तक मनीआर्डर पहुंचाने की व्यवस्था की। 1957-62 तक वे रेल मंत्री रहे। इस अवधि में बाबूजी ने रेल मंत्रालय में सुधार किये, गांव–देहात से नई रेल लाइनें बिछवाईं और रेल विभाग में अनुसूचित जाति के आरक्षित कोटे को पूरा करने के लिए खुली भर्ती शुरू की, और रेलवे स्टेशनों पर पानी पिलाने की जनता प्याऊं पर वाल्मीकि समाज के व्यक्तियों की नियुक्ति की। यह बाबूजी का नया क्रांतिकारी कदम था। इससे जनता के दिल में बाबूजी का आदर, सम्मान व विश्वास और बढ़ गया। 1962-63 में परिवहन व संचार मंत्री तथा 1966 में श्रम, रोजगार व पुनर्वास मंत्री बनाया गया। हर मंत्रालय को अपने कार्यों से बाबूजी ने चार चांद लगाये। देश में जब अन्न संकट था और खेती की जमीन सूखे के कारण बंजर हो चली थी और किसान आत्महत्या कर रहे थे, तब 1966 में बाबूजी को खाद्य व कृषि मंत्री बनाया गया।

बाबूजी के खाद्य व कृषि मंत्री पद सम्हालते ही सारे देश में जोरदार वर्षा होने लगी, खेत लहलहाने लगे। देश में खाद्य पदार्थों से अनाज के गोदाम भर गये, किसानों की आत्महत्या रुक गई और बाहर से अनाज मंगाना बंद हो गया। बाबूजी ने खाद्य व कृषि विभागों में नये नये सुधार किए जिससे देश में 'हरित क्रांति' हो गई और पशुओं की अच्छी तरह परवरिश होने पर देश में दूध–घी की भरमार होने पर देश में 'स्वेत क्रांति' की धूम मच गई। देश की इस खुशहाली का सीधा श्रेय बाबूजी को दिया गया। बाबूजी का सबसे महान ऐतिहासिक कार्य 1971 का भारत–पाकिस्तान युद्ध था जो बाबूजी के कुशल नेतृत्व व निर्देशन में पाकिस्तान की जमीन पर लड़ा गया था। उस समय बाबूजी देश के रक्षा मंत्री थे। इस युद्ध में भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना के घुटने टिकवा दिये और एक लाख पाकिस्तानी सैनिकों को बंदी बना लिया गया। इस युद्ध की विजय के रूप में बाबूजी ने पाकिस्तान के बंगाल प्रदेश को स्वतंत्र कराकर एक नया राष्ट्र 'बंगलादेश' बना दिया। पाकिस्तान की धरती पर युद्ध जीतकर उसके एक लाख सैनिकों का आत्मसमर्पण कराकर, पाकिस्तान को खंडित कर नया बंगलादेश बनाने का बाबूजी की सूझबूझ, पराक्रम, युद्ध नियोजन का कमाल था जिसके लिए उन्हें 'भारतरत्न' के सम्मान से विभूषित किया जाना चाहिए था, पर उस विजय का सेहरा अपने सिर बांधकर प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 'भारतरत्न' का खिताब अपने नाम कर लिया।

बाबूजी के साथ यह पहला अन्यायपूर्ण धोखा व विश्वासघात नहीं था, इससे पहले भी उनके साथ चार बार देश का प्रधानमंत्री बनाये जाने के अवसर आने पर उन्हें जानबूझकर रोका गया और उनसे कमतर व्यक्तियों को प्रधान बनाया गया। प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के देहान्त के बाद बाबूजी सबसे वरिष्ठ मंत्री होते हुए भी उन्हें प्रधानमंत्री न बनाकर श्री लाल बहादुर शास्त्री को देश का प्रधानमंत्री बनाया गया। 1965 में भारत–पाक युद्ध के बाद जब लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु हो गई तो बाबूजी को प्रधानमंत्री बनाने का अवसर आया, पर उस समय कांग्रेस पार्टी में बाबूजी के नाम की उपेक्षा कर मोरारजी भाई देसाई और इन्दिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए झगड़ा शुरू हो गया। इस पर बाबूजी ने इन्दिरा गांधी का साथ दिया और वह देश की प्रधानमंत्री बन गई। 1977 में देश से आपातकाल खत्म होने पर बाबूजी ने कांग्रेस छोड़कर जनता पार्टी के प्रमुख के नाते देश में चुनाव अभियान का नेतृत्व किया और चुनाव में जनता पार्टी को दो–तिहाई सीटों से जिताया। उस समय श्री जयप्रकाश नारायण ने बाबूजी को प्रधानमंत्री बनाने का आदेश दिया था पर आचार्य कृपलानी ने झूठ बोलकर मोरारजी भाई के नाम की घोषणा करा दी। यहां भी तीसरी बार बाबूजी के साथ धोखा हुआ। मोरारजी भाई देसाई के प्रधानमंत्री पद से त्याग पत्र देने के बाद बाबूजी को प्रधानमंत्री बनाया जा सकता था पर यहां भी उनकी उपेक्षा करके चौ. चरण सिंह को प्रधानमंत्री बना दिया गया। इस तरह राष्ट्रसेवा का फल बाबूजी को अपने 40 साल के संसदीय जीवन में उपेक्षा, अपमान, धोखा और विश्वासघात के रूप में मिला। इसके लिए उनके मन में क्षोभ जरूर था, पर अपने राष्ट्र व समाज की सेवा में उन्होंने कभी कोताही नहीं बरती, बल्कि और जोर–शोर से अपने कर्त्तव्य पालन में आरुढ़ रहे । शायद देश की राजनीति भी जातपांत, ऊंच–नीच की दलदल में फंसी है जो किसी के कामों की श्रेष्ठता को अनदेखा कर ऊंची जाति को बढ़ावा देती है। बाबूजी पूरे जीवन इसी जातपांत, वर्ण व्यवस्था और भेदभाव से लड़ते रहे।

1981 में मैं मीनाक्षीपुरम में कुछ दलित अछूतों ने सवर्णों के दुराचार से परेशान होकर धर्म परिवर्तन करके मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लिया। इस पर विश्व हिंदू परिषद् ने दलित अछूतों को पेट्रो–डालर लालच देकर मुसलमानों पर धर्म परिवर्तन कराने का आरोप लगाया और भविष्य में दलितों को धर्म परिवर्तन से रोकने

के लिए नई दिल्ली के वोट क्लब पर विराट् हिंदू सम्मेलन करने की घोषणा की। बाबूजी ने विश्व हिंदू परिषद् के नेताओं द्वारा धर्म परिवर्तन का दलितों पर झूठा आरोप लगाने पर घोर भर्त्सना की और उन्हें जातपांत, वर्ण व्यवस्था, ब्राह्मणवाद से भरे हिंदू धर्मग्रंथों में परिवर्तन करने या उनकी होली जलाने की चेतावनी दी।

बाबूजी ने मुझे बुलाकर कहा कि विश्व हिन्दू परिषद् वर्ण व्यवस्था को कायम रखने के लिए वोट क्लब पर विराट हिंदू सम्मेलन कर रही है, तुम्हें उसके विरोध में 'जागृति सम्मेलन' करना है। मैंने बाबूजी के आदेश पर 18 जुलाई, 1981 को फिरोजशाह कोटला, दिल्ली के मैदान में 'जागृति सम्मेलन' आयोजित किया जिसमें बाबूजी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन में पधारे और 50 हजार दलित प्रतिनिधियों को सम्बोधित किया और हिंदू नेताओं को चेतावनी दी कि अगर दलितों के प्रति उनका रवैया नहीं बदला तो वे मीनाक्षीपुरम के दलितों की तरह धर्म परिवर्तन कर लेंगे। इसका सारा दोष हिंदू नेताओं पर होगा। इस अवसर पर 52 फुट ऊंचा ब्राह्मणवाद का पुतला भी फूंका गया। इसके अगले दिन ही बाबूजी के आह्वान पर प्रसिद्ध समाजसेवी श्री यादकरण 'याद' ने चेतावनी स्वरूप दिल्ली की जामा मस्जिद में जाकर सपरिवार हिंदू धर्म छोड़कर मुस्लिम धर्म अपना लिया। इस क्रांतिकारी कदम से डर कर हिंदू नेताओं ने बाबूजी के पांव पकड़कर माफी मांगी।

बाबूजी क्रांतिकारी चिन्तनशील नेता थे। दलित समाज में परिवर्तन के लिए वे हमेशा सोचते रहते थे। बाबा साहब डा. अम्बेडकर के समतावादी, लोकतान्त्रिक विचारों को वे हर दलित के घर तक पहुंचाना चाहते थे। एक दिन उन्होंने मुझसे बातों ही बातों में पूछ लिया कि देश में आपके 'हिमायती' समाचार पत्र की तरह कितने दलितों के समाचार पत्र निकलते हैं। मैंने विनम्रता से उन्हें बताया कि कोई दो–ढाई सौ समाचार पत्र, इस पर उन्होंने कहा कि तुम उन समाचार पत्रों के सभी मालिक व सम्पादकों का सम्मेलन दिल्ली में बुलवाओ। खर्च की चिन्ता न करो।

बाबूजी के आदेश पर मैंने भारत में निकलने वाले सभी दलित समाचार पत्रों के सम्पादकों का पहला सम्मेलन 1981 में व दूसरा 1983 को नई दिल्ली के कान्स्टीच्यूशन क्लब में बुलवाये। बाबूजी ने इन दोनों सम्मेलनों के दलित पत्रकारों, सम्पादकों व दलित लेखकों को सम्बोधित किया और उन्होंने उनका दिशा निर्देशन किया कि वे अपने समाचार पत्रों में बहुलता के साथ दलित दमन व दलित अत्याचार पर तो लिखें ही साथ ही, अपने संत–महात्माओं के सन्देशों और अपने महापुरुषों के समतावादी विचारों को भी प्राथमिकता दें। बाबूजी ने कहा कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर के समतावादी लोकतांत्रिक विचारों को हर घर और हर जन तक ले जाने की जरूरत है। अभी हमें बाबा साहब के उस अधूरे सपने को पूरा करना है जिनमें उन्होंने दलितों को समता, सम्मान, न्याय, स्वतंत्रता दिलाने की बात की थी। बाबूजी के प्रयास से देश के सभी दलित पत्रकार, सम्पादक, दलित लेखक पहली बार एक मंच पर आये। बाबूजी ने भी प्रत्येक प्रतिनिधि से प्यार से मिलकर उन्हें प्रोत्साहित किया है।

बाबूजी अक्सर अपने भाषण में कहा करते थे कि हम मूल निवासी हैं। हमारा इतिहास गौरवमयी रहा जो वेद–शास्त्रों में इधर–उधर झांकता नजर आता। हमारी सभ्यता और संस्कृति उच्च कोटि की थी जिसे नष्ट करके दफना दिया गया। उसकी खोज होनी चाहिए। बुद्ध से लेकर रविदास कबीर तक हमारे सन्त महात्माओं की मानवतावादी अमृतवाणी लोक संगीत व गायन मे बिखेरी पड़ी है, उन्हें भी आज एकत्रित करने की जरूरत है। हमारे दलित महापुरुष और वीरों और वीरांगनाओं के इतिहास को भी नष्ट भ्रष्ट किया जा रहा है। उन्हें यथोचित सम्मान देने के लिए उन पर वीर गाथायें लिखी जानी चाहिएं।

हमने जब बाबूजी से कहा कि न तो हमारी ऐसा कोई संस्था है और न ही कोई ऐसा मंच है जो अपने गौरवमयी इतिहास की खोज करे, अपने सन्तों की वाणी को एकत्रित करे, जो अपनी सभ्यता और संस्कृति को खोज निकाल और अपने सन्त, महात्मा और महापुरुषों के पराक्रम को उजागर करे। ऐसी जो भी संस्थायें हैं वे सभी ब्राह्मणवादी हैं जो जातपांत और वर्ण व्यवस्था को मजबूत करने में लगी हैं।

तब बाबूजी ने कहा कि अपनी ऐसी कोई साहित्यिक संस्था बनाओ जो अपने पूर्वजों के इतिहास को खोज सके और अपने महापुरुषों की वाणी, उद्बोधन, लेखन को एकत्रित कर दलित साहित्य के रूप में प्रकाशित कर सके। बाबूजी के इस सुझाव पर हमने उन्हें 'दलित साहित्य अकादमी' का नाम सुझाया जिसे उन्होंने तुरन्त सहमति दे दी। और इस तरह बाबूजी की प्रेरणा से 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी' का 6 अगस्त, 1984 की स्थापना उन्हीं के कर कमलों द्वारा नई दिल्ली के कान्स्टीच्यूशन क्लब में की गई और संस्थापक अध्यक्ष के रूप में अकादमी के संचालन की बागडोर मेरे हाथ में सौंपी।

बाबूजी के हृदय में दलितों का दुःख दर्द सदैव उभार लेता रहता था। इसलिए वह अपने दरवाजे पर आये किसी भी व्यक्ति को खाली हाथ व निराश नहीं भेजते थे, उनकी कोठी के द्वार सभी के लिए खुले थे। विद्यार्थियों की वह दिल भरकर मदद करते थे। एक बार हरियाणा के गवर्नर बाबू परमानन्द जब अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्स्टिी में एल. एल.बी. कर रहे थे तो उनके पास फीस देने की पैसे नहीं थे। ऐसे में एक पोस्टकार्ड बाबूजी को भेजकर विद्यार्थी परमानन्द ने उनसे कुछ मदद करने की प्रार्थना की। बाबूजी ने पत्र मिलते ही मनीआर्डर से उन्हें 400 रु. भिजवा दिये। इसमें उनकी फीस, भोजन, आवास का खर्चा पूरा हो गया। बाबू परमानन्द बाबूजी की इस दरियादिली की

बात आजीवन दोहराते रहे।

1977 में बाबूजी देश के उप–प्रधानमंत्री थे। उस समय मैंने उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर 'दलितों के मसीहा–बाबू जगजीवन राम' नाम से एक फिल्म बनानी शुरू की। शूटिंग पूरी होने के बाद मुझे बम्बई जाकर उसे पूरा करना था और सेंसर बोर्ड से इसका रजिस्ट्रेशन प्राप्त कराना था। बम्बई में मेरा कोई जानकर नहीं था जहां ठहरकर फिल्म का सब काम पूरा कर सकूं। कुछ हिचकिचाते यह बात मैंने बाबूजी को बताई। उन्होंने तुरन्त कहा इसमें परेशानी की क्या बात है, वहां सब बन्दोबस्त हो जायेगा। अपने निजी सचिव त्रिवेणी सहाय को बुलाकर कहा कि 'सुमनाक्षर का मुम्बई जाने और वहां ठहरने की व्यवस्था करो।' मैं अपने फोटोग्राफर की टीम के साथ जैसे ही मुम्बई सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन पहुंचा, दो कारें हमें लेने के लिए वहां पहले से खड़ी थीं। वहां हमें होटल में ठहराया गया और हर तरह की मदद हमें वहां बाबूजी के नाम पर मिली।

देश में बाबूजी के कामों का सही मूल्यांकन नहीं हुआ। उन्हें सदैव बाबा साहब डा. अम्बेडकर का विरोधी प्रचारित किया गया और दोनों के अनुयायियों की बीच नफरत की दीवार खड़ी करने का निरन्तर षड्यंत्र रचा जाता रहा, जबकि बाबूजी अपने अन्तिम क्षण तक बाबा साहब के कार्यों को आगे बढ़ाते रहे और उनके द्वारा भारतीय संविधान में दलितों को दिये आरक्षण कोटे व अन्य प्रावधानों पर दृढ़ता से अमल कराते रहे। बाबूजी ने अपने राजनीतिक जीवन के 40 सालों में मंत्रीपद पर रहते हुए राष्ट्रनिर्माण के लिए अद्‌भुत कार्य किये। गरीबी हटाओ, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, राजा–महाराजाओं के प्रिवीपर्स की समाप्ति, कार्यक्रमों के साथ रेल, संचार, डाकघर, कृषि, मजदूर नीति में सुधार और प्रगति के पीछे बाबूजी की प्रमुख भूमिका रही है। देश में बीस सूत्रीय कार्यक्रम लागू कराने और किसान, मजदूर को न्याय दिलाने में बाबूजी अग्रणीय थे। उन्होंने पं. जवाहर नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री मोराजी भाई देसाई जैसे प्रधानमन्त्रियों के मंत्रिमंडल में मंत्री रहकर कार्य किया और राष्ट्र निर्माण में सदैव अपनी अलग छाप छोड़ी। वह स्वतंत्रता आन्दोलन में कई बार जेल गये, कामराज प्लान में मंत्री पद से इस्तीफा दिया। चार बार प्रधानमंत्री बनने से रोका गया, पर देश के प्रति इनकी निष्ठा में कभी कमी नहीं आई।

बाबूजी के विषय में दो घटनाओं का विशेष उल्लेख करना जरूरी है। इसमें पहली घटना है अंग्रेजी हुकूमत द्वारा कम्युनल अवार्ड दिये जाने की घोषणा के विरोध में महात्मा गांधी द्वारा पुणे की यरवदा जेल में आमरण अनशन की घोषणा। बाबूजी उस समय राजनीति में नये–नये आये थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि अछूतों (दलितों) को अंग्रेजी सरकार कुछ अधिकार दे रही है तो गांधी जी आमरण अनशन करके इसका विरोध क्यों कर रहे है? इस बाबत उन्होंने गांधी जी को एक पत्र लिखकर यरवदा जेल भेजा था और पूछा था कि आप आमरण अनशन क्यों कर रहे हैं?

बाबूजी ने भी बाबा साहब डा. अम्बेडकर की तरह बचपन से छुआछूत, जातपांत, नीच ऊंच के अभिशाप को झेला था। इसलिए पूरे जीवन में वे सामाजिक समता लाने के लिए कटिबद्ध रहे। अपने विद्यार्थी काल से ही वे बाबा साहब डा. अम्बेडकर के सामाजिक क्रान्तिकारी कार्यों से प्रभावित थे। बाबूजी ने 1935 में जब राजनीति में पांव रखा, तब तक तो बाबा साहब अपने क्रान्तिकारी जन आन्दोलनों से विश्व प्रसिद्धि पा चुके थे। बाबूजी ने 1935 मुख्य अतिथि में दलित वर्ग संघ की स्थापना की थी और इसके पटना अधिवेशन में बाबा साहब डा. अम्बेडकर को के रूप में पधारने के लिए एक पत्र लिखा था। बाबा साहब ने सम्मेलन में पधारने की स्वीकृति भी दी थी पर किसी कारणवश वह सम्मेलन में नहीं पहुंच सके। बाबूजी को ही मुख्य अतिथि के रूप में इस सम्मेलन को सम्बोधित करना पड़ा। यह उनके जीवन में दूसरी घटना थी।

बाबा साहब और बाबूजी एक दूसरे के पूरक थे। दलितों के हितों का जब कांग्रेसी विरोध करते थे तो इसकी शिकायत बाबा साहब बाबूजी की मार्फत गांधी जी तक पहुंचाते थे। प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू तथा अन्य कांग्रेसी नेता भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति / जनजाति के लिए आरक्षण के प्रावधान रखे जाने का विरोध कर रहे थे। बाबूजी ने गांधी के संज्ञान में यह बात लाकर उन नेताओं पर फटकार लगवा दी। इसके बाद भारतीय संविधान में आरक्षण प्रावधान जोड़ दिया गया। मद्रास में डा. अम्बेडकर जन्मोत्सव पर दिया बाबूजी का भाषण बाबा साहब डा. अम्बेडकर के प्रति उनके सच्चे प्यार को दर्शाता है।

बाबूजी का जन्म बिहार के आरा जिले के चन्दवा गांव में 5 अप्रैल 1908 में हुआ। वहीं से उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूरी की। फिर महामना मदनमोहन मालवीय जी के आग्रह पर वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से बीएस. सी. (स्नातक) की परीक्षा पास की। अपनी संसदीय जीवन के 40 साल एक ही संसदीय क्षेत्र (स्नातक) की परीक्षा पास की। अपनी सासाराम (बिहार) से सदैव विजयी रहकर सरकार में कृषि मंत्री, रेल मंत्री, संचार मंत्री और रक्षा मंत्री के अलावा देश के उप–प्रधानमंत्री रहे। रक्षा मंत्री के रूप में उन्होंने 1971 में भारत–पाक युद्ध लड़ा, जिसमें पाकिस्तान के युद्ध में हारने के बाद पाकिस्तान से पृथक् होकर बंगलादेश नया राष्ट्र बना। इस युद्ध में एक लाख पाक सैनिकों ने बाबूजी के नेतृत्व के सामने हथियार डालकर आत्मसमर्पण कर दिया। भारतीय इतिहास में बाबूजी को रक्षा मंत्री के रूप में सदैव याद रखा जायेगा। लम्बी बीमारी के बाद उनकी मृत्यु 6 जुलाई, 1986 को नई दिल्ली में हुई। भारत माता के उस महान सपूत को भावभीनी श्रद्धांजलि। •

हिमायती
7 / मई (प्रथम) 2026 (कुल पृष्ठ 8)
प्रकाशन तिथि : 14 मई, 2026
आर. एन. आई. नं. 40611/62
RNI No. 40611/62

समता सैनिक दल का इतिहास

• एल.आर. बाली

अखिल भारतीय समता सैनिक दल क्या और क्यों ?

बाबा साहब डा. अंबेडकर द्वारा 13 मार्च, 1927 की स्थापित, अखिल भारतीय समता सैनिक दल उन लोगों द्वारा बनाया गया, ऐसा स्वतंत्र और अराजनीतिक संगठन है जो समाज में समता (बराबरी) चाहते हैं, लेकिन जिन्हें इनसे वंचित रखा गया है दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यह ब्राह्मणवादी व्यवस्था के शिकार अथवा ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरोधी लोगों की ऐसी संस्था है जो सामाजिक समता के महान उद्देश्य से प्रेरित हैं, क्योंकि शूद्र कहे जाने वाले लोग, जोकि आज अनुसूचित जातियां, अनुसूचित जनजातियां, और पिछड़ी श्रेणियां कहलाते हैं, जातिवाद के सबसे ज्यादा और भयानक रूप में शिकार हुए, अतः ऐसे लोगों का इस संस्था में मुख्यतः होना स्वाभाविक ही है।

अखिल भारतीय समता सैनिक दल का संक्षिप्त इतिहास

शूद्रों ने, विशेषतः अछूतों ने जब अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया, जातिवादी ने कई ओछे हथकंडे अपनाने शुरू किए, जब ये लोग अपने अधिकारों के लिए, जन–चेतना जागृत करने के लिए अथवा दुनिया को अपनी दुर्दशा, अपने साथ हो रहे अन्याय अत्याचार बताने के लिए इक्ट्ठे होते, कहीं कोई जलसा या कांफ्रेंस करते जातिवाद के गुर्गे व गुण्डे इनके जलसों में गड़बड़ी पैदा करके नेताओं द्वारा बात कहे जाने से पहले ही लोगों को तितर–बितर कर देते।

दल की अंबेडकरी आंदोलन में एक सशक्त भूमिका रही है. लेकिन आज समाज ने इस संगठन को करीब–करीब भुला ही दिया है, 20 जुलाई 1942 को मोहन नगर, नागपुर में आयोजित समता सैनिक दल के प्रथम अधिवेशन में डा. बाबा साहब अम्बेडकर ने कहा था, "यदि हम अपनी राजनीतिक गतिविधियां बगैर किसी बाधा व छेड़खानी के करते रहे हैं। तो इसका श्रेय हमारे स्वयंसेवी संगठन समता सैनिक दल को है। जिसकी शक्ति के कारण कोई हमारे काम में रूकावट पैदा नहीं कर सकता। हम इसके बहुत ज्यादा कृतज्ञ हैं।''

डा. बाबा साहब अम्बेडकर द्वारा समय–समय पर विविध राजनैतिक संगठन बनाए गए, जैसे 'डिप्रेस्ड क्लासिज फैड्रेशन', 'स्वतंत्र मजदूर पार्टी', 'शैड्यूल कास्टम फैड्रेशन' तथा 'रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया' की स्थापना की संकल्पना, इसी के साथ–साथ उन्होंने 'मूकनायक', 'बहिष्कृत भारत', 'समता', 'जनता' तथा 'प्रबुद्ध भारत' इस प्रकार के समाचारपत्र शुरू किए, अध्ययन से हमें पता चलता है कि बाबा साहब ने समय–समय पर अपने राजनैतिक संगठनों के साथ–साथ समाचारपत्रों के नामों में भी परिवर्तन किया। किन्तु एक विशेष बात यह देखी जाती है कि इन सबसे पहले स्थापित 'समता सैनिक दल' के नाम में या इसके उद्देश्य और कार्यक्रम में परिवर्तन करने की उन्हें कभी भी आवश्यकता महसूस नहीं हुई। इसी से पता चलता है कि डा. बाबा साहब अम्बेडकर अखिल भारतीय समता सैनिक दल को बनाए रखना कितना जरूरी समझते थे।

डा. बाबा साहब अम्बेडकर ने जब अछूतोद्धार का आंदोलन शुरू किया, इस दौरान मुंबई विधान मंडल में कुछ अछूत प्रतिनिधित चुने गए थे, यह प्रतिनिधि अछूतों की समस्याओं को सदन में रखने लगे थे, ज्ञानदेव धुवनाथ धोलप, आनंदराव सुर्वे तथा सीताराम केशवराव बोले ने अछूतों के उत्थान के लिए सदन में विभिन्न प्रस्ताव रखे थे। रायबहादुर सी.के. बाले ने 4 अगस्त 1923 को मुंबई विधान सभा में अछूत वर्ग के लिए सभी सार्वजनिक जलस्त्रोतों, नदी, तालाब, कुंओं से पानी भरने, धर्मशाला, शिक्षा संस्थान, न्यायालयों में मुक्त प्रवेश मिलने, अस्पताल और सरकारी दफ्तरों में बेरोकटोक प्रवेश मिलने का एक क्रांतिकारी प्रस्ताव रखा था, विधान मंडल द्वारा इस प्रस्ताव को पारित करके 11 सितंबर, 1923 को इसे संपूर्ण मुंबई राज्य में लागू करने के लिए आदेश पारित किया गया था।

20 जुलाई 1924 को मुंबई में डा. बाबा साहब अम्बेडकर ने 'बहिष्कृत हितकारनी सभा' की स्थापना की थी। अछूतों में जागृति लाने के लिए बहिष्कृत हितकारणी सभा द्वारा जगह–जगह पर सभाएं ली जाती थी। डा. बाबा साहब अम्बेडकर के उपदेशों तथा विचारों से धीरे–धीरे अछूतों को उत्तेजना मिलने लगी और कुछ ही दिनों में आंदोलन की जड़ें मजबूत होने लगी।

डा. बाबा साहब अम्बेडकर द्वारा 1920 से अछूतोद्धार का कार्य अपने हाथ में लेने के बाद से अछूत समाज डा. बाबा साहब अम्बेडकर के नेतृत्व में संगठित होने लगा था, जैसे–जैसे अछूत लोग सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए एकत्रित होकर संघर्ष करने लगे, वैसे–वैसे धर्मान्ध हिन्दू तथा बाबा साहब के विरोधी लोग उनके विश्वास एवं संगठन को तोड़ने के लिए उन पर हमला करने और डराने–धमकाने के लिए गुण्डों का इस्तेमाल करने लगे। जैसे–जैसे अछूतों में जागृति आ रही थी वैसे–वैसे हिन्दू लोग गांवों तथा शहरों में इन्हें दबाएं रखने के लिए और अधिक प्रताड़ित करने लगे सभा–सम्मेलनों तथा जलसों में गड़बड़ी पैदा करने लगे।

कुलाबा जिला बहिष्कृत परिषद् का प्रथम अधिवेशन महाड़ में 19 तथा 20 मार्च, 1927 को आयोजित किया गया था बाबा साहब इस आंदोलन को सफल बनाने के लिए कई दिन पूर्व से नियोजनपूर्वक कार्य कर रहे थे। इस परिषद का मुख्य उद्देश्य महाड़ सत्याग्रह के माध्यम से अछूतों में जागृति पैदा करना था। बाबा साहब द्वारा 1920 से प्रारंभ किए गए अछूतोद्धार आंदोलन के समय से अभी तक के कार्यक्रमों को असफल बनाने के लिए धर्मान्ध लोगों द्वारा किए गए प्रयत्नों से वे अच्छी तरह से परिचित थे। इस

स्थिति से निपटने के लिए ऐसे समय बाबा साहब को अपने वर्ग के सैंकड़ों मिलटरी से सेवानिवृत हुए सैनिक दिखाई दिए, डा. बाबा साहब अम्बेडकर ने भारतीय समाज में समता प्रस्थापित करने के लिए इन सेवानिवृत सैनिकों को संगठित होने का आह्वान किया, आह्वान करते ही इन सेवानिवृत सैनिकों को चुपचाप बैठे रहना उचित नहीं लगा। उन्होंने बाबा साहब जैसे सच्चे मार्गदर्शक की बातों का महत्व समझा तथा वह समाज में समता प्रस्थापित करने और सच्ची लोकसेवा के लिए इकट्ठा हुए।

पढ़े-लिखे दलितों से बहुत निराश रहे बाबा साहब

प्रो. (डा.) श्यौराज सिंह 'बेचैन', पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय

हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगू आदि भाषाओं में दलित लेखकों द्वारा रचे जा रहे साहित्य की एक विशेषता यह है कि लेखक अपनी रचनाएं अप्रैल में ही प्रकाशित कराना चाहते हैं। यह संयोग ही है कि दलितों में मुक्ति चेतना का बीजारोपण करने और इंसानी हकूक के लिए संघर्ष करने वाले कई नायकों के जन्मदिन अप्रैल में ही आते हैं। 5 अप्रैल को बाबू जगजीवन राम, 11 अप्रैल को महात्मा ज्योतिराव फुले और 14 अप्रैल को बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर पैदा हुए थे।

बात दो सौ साल पूर्व पैदा हुए लेखक और सुधारक ज्योतिराव फुले से शुरू करते हैं। उन्हें भी जाति–व्यवस्था द्वारा अस्पृश्यता का स्वाद चखाया गया था। हालांकि, वह अछूत नहीं शूद्र थे और एक संपन्न माली परिवार में पैदा हुए थे। जब वह अपने ब्राह्मण मित्र की शादी में गए. तो उन्हें 'बेआबरू' कर बारात से बाहर कर दिया गया। फुले तार्किक साहित्यकार बने और 'सत्यशोधक समाज' नामक संस्था की स्थापना की। फुले की किताब 'गुलामगिरी' बाहरी गुलामी से अधिक भीतरी गुलामी और धार्मिक संदर्भों से भरी है। उन्होंने किसानों, अस्पृश्यों व स्त्रियों की समस्याओं, अशिक्षा, बाल–विवाह के विरोध और विधवा पुनर्विवाह को लेकर अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को आगे बढ़ाया और स्त्री शिक्षा का आधारभूत कार्य किया। 28 नवंबर, 1890 को फुले की मृत्यु के साथ समाज परिवर्तन की जो कड़ी टूटी, वह 14 अप्रैल, 1891 को डा. भीमराव अम्बेडकर के जन्म के साथ फिर से जुड़ गई।

अम्बेडकर से स्कूल में साथ बैठने पर घृणा की गई। पिता से मिलने गए, तो सातारा स्टेशन से बैलगाड़ी में ले जाने से इनकार किया गया। बड़ौदा राज्य की सेवा में गए. तो कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा बहिष्कार किया गया। पारसी सराय में जाति पहचानकर उनका सामान बाहर फेंक दिया गया और राज्य में कहीं रहने की जगह भी नहीं मिली। उन्हें ऐसे कटु अनुभवों से गुजरना पड़ा। डा. अम्बेडकर ने हार नहीं मानी और चावदार तालाब पर जल अधिकार और कालाराम मंदिर प्रवेश के लिए आंदोलन चलाया। साल 1931 के 'गोलमेज सम्मेलन' में उन्होंने अछूतों के प्रतिनिधि के तौर पर हिस्सा लिया और भारत के संविधान निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाई।

डा. अम्बेडकर ने महिलाओं के हक के लिए 'हिंदू कोड बिल' का प्रारूप पेश किया, तो उन्हें प्रसूति अवकाश दिलाने, श्रमिक महिलाओं के बच्चों के लिए पालनाघर बनवाने, महिला कर्मियों को पुरुषों के समान वेतन दिलाने का कार्य किया। उन्होंने अनुसूचित जातियों के लिए पृथक निर्वाचन की मांग की, मगर समर्थन न मिलने पर 'पूना पैक्ट' के तहत विधायिका में उनके लिए स्थान आरक्षित कराया। बाबा साहब यहीं नहीं रुके, उन्होंने अस्पृश्यता को जुर्म बनाया व 'बहिष्कृत जातियों' को ईसाइयत व इस्लाम धर्म ग्रहण करने से रोककर वैकल्पिक रास्ते के तौर भारतीय मूल के बौद्ध धर्म में दीक्षित कराया।

जिन 'बहिष्कृत जातियों' को उन्होंने आत्मनिर्भर बनने की शिक्षा दी, उनके सामाजिक होने के बजाय वैयक्तिक सरोकारों में सिमटने का दुखद अंदेशा भी बाबा साहब को पहले ही हो गया था। 18 मार्च, 1956 को आगरा की एक आमसभा में उन्होंने भारी मन से कहा, ''मुझे हमारे लिखे लोगों ने बहुत धोखा दिया है। आशा थी कि ये उच्च शिक्षा प्राप्त कर समाज की सेवा करेंगे, किंतु मैं देखता हूं कि गुलाम मानसिकता के क्लर्कों की भीड़ एकत्र हो गई है, जो समाज का सामूहिक उत्थान करने के बजाय अपना पेट पालने में लगी हुई है।'' यही नहीं, मार्च 1956 में उन्होंने यह भी कहा था, 'मेरी स्थिति तंबू के नीचे लगे बंबू जैसी हो गई है। मुझे डर है, इस आंदोलन रूपी तंबू के नीचे से बंबू रूपी मेरे निकल जाने के बाद कहीं यह तंबू धराशायी न हो जाए।''

उन्हें इसका आभास हो ही रहा था कि 6 दिसंबर, 1956 को उनका परिनिर्वाण हो गया। इसके साथ ही दलित–वंचित जातियों के सिर से सबसे बड़े अभिभावक का साया उठ गया। फुले–अम्बेडकर ने अपने लेखन व संगठन के माध्यम से लिखने सोचने और संगठित आवाज उठाने की जो प्रेरणा दी, वे वंचित तबकों के लिए आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। •

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। □ सह सम्पादक एवं व्यवस्थापक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009